पंडित दीन दयाल उपाध्याय के सामाजिक न्याय और आर्थिक अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

के

इतिहास (सामाजिक विज्ञान संकाय)

में

पी–एच॰ डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रारूप

शोध पर्यवेक्षक
(प्रो0 संजय झा)
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
एल0एन0एम0यू0, दरभंगा

शोधार्थी
कुणाल
वर्ग क्रमांक–35
विश्वविद्यालय क्रमांक–E2210028

शोध परियोजना प्रारूप

1- शोध शीर्षक :

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के सामाजिक न्याय और आर्थिक अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

2- प्रस्तावना (शोध के मुद्दे) :

पंडित दीन दयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति और दर्शन के एक ऐसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व थे, जिन्होंने सामाजिक न्याय और आर्थिक अवधारणा को भारतीय सांस्कृतिक और परंपरागत मूल्यों के साथ जोड़कर एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनकी विचारधारा एकात्म मानववाद पर आधारित थी, जो समाज के अंतिम व्यक्ति (अंत्योदय) के कल्याण और समग्र विकास की वकालत करती है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सामाजिक न्याय केवल आर्थिक या कानूनी समानता तक सीमित नहीं था। उन्होंने समाज के हर वर्ग के लिए अवसर और संसाधनों की समान उपलब्धता सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उनके सामाजिक न्याय के सिद्धांत में अंत्योदय का सिद्धांत ,सामाजिक समरसता ,समान अवसर एवं भागीदारी, धर्म और नैतिकता पर आधारित समाज आदि शामिल थे। अंत्योदय का सिद्धांत में समाज के सबसे कमजोर और उपेक्षित व्यक्ति का उत्थान ही मुख्य उद्देश्य था। उनकी दृष्टि में सामाजिक न्याय तभी सार्थक है जब समाज के अंतिम व्यक्ति को भी समान अधिकार और

संसाधन प्राप्त हों। सामाजिक समरसता में जाति, धर्म, वर्ग और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त करने की उन्होंने वकालत की। उनका विश्वास था कि सामाजिक न्याय तभी संभव है जब समाज में समरसता और समानता हो। समान अवसर और भागीदारी में दीन दयाल उपाध्याय ने सभी वर्गों को समान अवसर और समाज के निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी का अधिकार दिए जाने की बात कही। धर्म और नैतिकता पर आधारित समाज उन्होंने सामाजिक न्याय को धर्म और नैतिकता के आधार पर परिभाषित किया। उनका मानना था कि न्याय व्यवस्था का उद्देश्य समाज में सद्भाव और संतुलन स्थापित करना होना चाहिए।

दीन दयाल उपाध्याय की आर्थिक अवधारणा आज के समय के लिए अत्यंत उपयोगी,सामयिक तथा महत्त्वता का विषय है। आज के परंपरागत अकादमिक दृष्टि से दीन दयाल उपाध्याय अर्थशास्त्री नहीं थे, इस से भी बढ़कर थे। अर्थ चितक होने के साथ ही उनका व्यक्तित्व समाजसेवी भाव से भरा हुआ था। देश और समाज की व्यवहारिक समस्याओं का गहन अध्ययन के उपरांत भारत की वर्तमान स्थिती के हिसाब और व्यावहारिक रूप से अर्थ चिंतन के क्या सूत्र हो सकते हैं, इस संबंध में पंडित दीन दयाल उपाध्याय का बहुत उपयोगी मार्गदर्शन हम सभी को प्राप्त होता है। जब भारत की दो पंचवर्षीय योजना पूरी हो गई तो योजना की संकल्पना, अवश्यकता, दृष्टि और दिशा को लेकर उन्होंने बहुत ही प्रमाणिक सारगर्भित टिप्पणी करने वाली एक पुस्तिका 'भारतीय अर्थनीति–विकास की एक दिशा' लिखी थी। जो कि अर्थ चिंतन के विषय में बहुत महत्व रखती है। वे कहा करते थे कि भारत को एडम स्मिथ, मार्शल, माक्स, केंज की अर्थ चिंतन की जकड़न से बाहर निकल के भारतीय अर्थ चिंतन के बारे में विचार करना चाहिए। साथ ही पंडित जी

सामान्य तौर से बोला करते थे कि भारत इतना सनातन, पुरातन और समृद्ध देश रहा है तो इस देश का अपना कोई अर्थ चिंतन, तंत्र, व्यवहार और दृष्टि जरूर रही होगी। आज के समय में उसका भी अध्ययन आवश्यक है। इन दो आयामों को लेकर दीन दयाल उपाध्याय ने अपने विचार प्रस्तुत किए। किसी भी विषय, सिद्धांत, नई रचना, व्यवस्था के बारे में विचार करते हैं तो विश्व दृष्टि का विचार करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि पश्चिम में खंडित, यांत्रिक विश्व दृष्टि के आधार पर सैद्धांतिक रचनाएं गढ़ी गई हैं। वो मनुष्य को सुख नहीं दे सकती और न ही मनुष्य का कल्याण कर सकती हैं। आज वर्तमान समय की भी यही जरूरत है कि समग्र, समन्वयित और एकात्म विश्व दृष्टि के आधार पर आगे बढ़ा जाए।दीन दयाल उपाध्याय ने स्वदेशी आंदोलन का समर्थन करते हुए भारत के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दियाए जिसमें घरेलू उत्पादों के उपयोग और स्वदेशी उद्योगों के पोषण का आह्वान किया गया था। उनकी वकालत का उद्देश्य आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देते हुए विदेशी शक्तियों पर भारत की निर्भरता को कम करना था। उन्होंने तर्क दिया कि भारत का आर्थिक विकास बाहरी ताकतों के बजाय अपने संसाधनों संस्कृति और परंपराओं में निहित होना चाहिए। दीन दयाल उपाध्याय ने सरल जीवन के महत्व पर जोर दिया और अत्यधिक भौतिकवाद को हतोत्साहित कियाए नैतिक उपभोग पर केंद्रित जीवन शैली और आयातित वस्तुओं पर निर्भरता को कम करने की वकालत की।

दीन दयाल उपाध्याय के आर्थिक दर्शन के केंद्र में अंत्योदय की उनकी अवधारणा थी जिसमें समाज के सबसे हाशिए पर पड़े सदस्यों के उत्थान का आह्वान किया गया था। यह विचार आर्थिक विकास के नैतिक आयाम को रेखांकित करता हैए यह सुझाव देते हुए कि अर्थव्यवस्था को केवल भौतिक लाभ को सुविधाजनक बनाने के बजाय सभी लोगों के कल्याण की सेवा करनी चाहिए। दीन दयाल उपाध्याय का दृष्टिकोण नैतिक अर्थशास्त्र

के साथ संरेखित होता है । जो नैतिक विकास और भौतिक प्रगति दोनों की वकालत करते हुए आर्थिक नीतियों में न्याय समानता और स्थिरता के सिद्धांतों को एकीकृत करता है। दीन दयाल उपाध्याय का आर्थिक दर्शन धर्म की अवधारणा में गहराई से निहित था । जिसमें धार्मिकता कर्तव्य और नैतिक जिम्मेदारी शामिल है। उन्होंने एक ऐसी आर्थिक प्रणाली की कल्पना की जो धर्म के साथ संरेखित थी । जहाँ आर्थिक गतिविधियाँ न केवल नैतिक सिद्धांतों द्वारा संचालित होती थींए बल्कि आम भलाई को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भी होती थीं। उनके विचार के केंद्र में यह विश्वास था कि आर्थिक शक्ति का विकेंद्रीकरण किया जाना चाहिए । जिससे स्वदेशी उद्योगों और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के विकास के माध्यम से स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाया जा सके। यह दृष्टिकोण स्वदेशी या आत्मनिर्भरता से जुड़ा था । जो विदेशी आयात पर निर्भरता को कम करने और घरेलू क्षमताओं को मजबूत करने की मांग करता था।

दीन दयाल उपाध्याय की दृष्टि को उनकी एकीकृत मानवतावाद की अवधारणा से समझा जा सकता है जो मनुष्यों और प्रकृति की परस्पर निर्भरता को पहचानती है। उनके आर्थिक दृष्टिकोण ने वर्तमान और भावी दोनों पीढ़ियों के कल्याण की रक्षा के लिए पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। जीडीपी वृद्धि पर पारंपरिक ध्यान को प्रगति के एकमात्र उपाय के रूप में खारिज करते हुए दीन दयाल उपाध्याय ने विकास के लिए एक अधिक समग्र दृष्टिकोण का आह्वान कियाए जो आर्थिक कारकों के साथ.साथ सामाजिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयामों को एकीकृत करता है। इस व्यापक ढांचे का उद्देश्य विकास के एक संतुलित और टिकाऊ मॉडल को विकसित करना है जो मानव गरिमा और पारिस्थितिक सद्भाव का सम्मान करता है।

दीन दयाल उपाध्याय ने गरीबी और अत्यधिक धन दोनों की अनुपस्थिति की विशेषता वाले एक आदर्श सामाजिक परिदृश्य की कल्पना की जिसमें खुद को बनाए रखने के लिए मेहनती श्रम की आवश्यकता पर जोर दिया गया। अत्यधिक धन की उनकी आलोचना संपत्ति के स्वामित्व पर अत्यधिक जोर देने पर केंद्रित थी यह तर्क देते हुए कि अत्यधिक धन असमानता समाज के स्वस्थ विकास के लिए हानिकारक थी। उन्होंने तर्क दिया कि आर्थिक प्रयासों को कृत्रिम मांग पैदा करने के बजाय बुनियादी मानव जरूरतों को पूरा करने की दिशा में उन्मुख किया जाना चाहिए खासकर अगर इस तरह के प्रयासों से खपत बढ़ जाती है। उनके विचार में अनियंत्रित आर्थिक विकास उपभोक्तावाद की संस्कृति को बढ़ावा देता है जो सामाजिक अशांति पैदा कर सकता है और अपराध दर को बढ़ा सकता है।दीन दयाल उपाध्याय ने तर्क दिया कि एक परिपूर्ण जीवन के लिए अनियंत्रित इच्छाओं और लालसाओं के विघटन की आवश्यकता होती है। उनका मानना था कि जब भूख और लालच अनियंत्रित हो जाते हैं, तब व्यक्तियों के अंदर असंतोष पैदा होता है जिससे मानवीय मूल्य क्षरित होते हैं । ऐसे वातावरण में, भौतिक धन की खोज अक्सर कौशल और नैतिक मूल्यों के विकास पर प्राथमिकता लेती है। दीन दयाल उपाध्याय के अनुसार, यह आध्यात्मिक शून्य भोजन, शक्ति, संपत्ति और यहां तक कि कामुक संतुष्टि के लिए एक अतृप्त वासना को बढ़ावा देता है, जिसे वे अमानवीय और नैतिक रूप से संक्षारक मानते थे। इस नैतिक पतन के जवाब में, उपाध्याय ने एक शुद्ध, संतुष्ट जीवन की खोज की वकालत की—जो अत्यधिक भौतिकवाद से परे है और आध्यात्मिक पूर्ति और नैतिक जीवन में निहित है। इसलिए, उनके आर्थिक दर्शन को आदर्शवादी के रूप में समझा जा सकता है, जो भौतिक धन की अथक खोज पर मानव कल्याण, सामाजिक सद्भाव और नैतिक विचारों को प्राथमिकता

देता है। यह दृष्टिकोण मानव गरिमा और आर्थिक विकास के नैतिक आयामों के प्रति उनकी व्यापक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

3. पूर्व अध्ययन (साहित्यिक सर्वेक्षण)

पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी का सम्पूर्ण जीवन त्याग, समर्पण और संघर्ष की एक मिसाल रहा है। वे एक कुशल संगठनकर्ता, राजनेता और समाजसेवी के साथ–साथ एक महान लेखक और दर्शनशास्त्री भी थे। उन पर अभी तक पर्याप्त मात्रा में कार्य नहीं हुआ है। इस सन्दर्भ में महेश चंद्र शर्मा की पुस्तक **पंडित दीन दयाल उपाध्याय कर्तृत्व एवं विचार** में दीनदयाल उपाध्याय का जीवन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा भारतीय जनसंघ के साथ एकात्म था। भारतीय जनसंघ उनकी निर्णायक भूमिका व नेतृत्व के कारण भारतीय राजनीति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक दल बना। दीनदयाल उपाध्याय संविधानवाद को धर्म–राज्य के रूप में स्वीकार करते थे। दीनदयाल अर्थनीति के प्रखर अध्येता थे। वे उत्पादन में वृद्धि, उपभोग में संयम तथा वितरण में समानता के पक्षधर थे। उनके चिंतन का प्रतिफलन 'एकात्म मानवतावाद' के रूप में हुआ, जो एक संपूर्ण जीवन–दर्शन है। यह व्यक्ति एवं समाज को विभक्त नहीं करता शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा के घनीभूत सुख की चिंता करता है तथा विराट् पुरुष के धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चतुर्पुरुषार्थों की संकलित साधना करता है।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के **एकात्म मानवतावाद एकात्म मानववाद तत्व मीमांसा, सिद्धान्त विवेचन** पुस्तक में दीनदयाल उपाध्याय द्वारा विकसित एकीकृत मानवतावाद की अवधारणा, राष्ट्र निर्माण और स्वतंत्रता के बाद एक एकीकृत भारत के निर्माण के विचारो के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इस पुस्तक में दीन दयाल उपाध्याय का दर्शन व्यक्ति के समग्र विकास पर जोर देता है, जो उनका मानना है कि राष्ट्र की सामूहिक प्रगति के लिए

आवश्यक है। वह एक व्यक्ति के चार आवश्यक घटकों की पहचान करता है: शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा। उपाध्याय के अनुसार, ये भारतीय दर्शन में उल्लिखित मानव जीवन के चार सार्वभौमिक उद्देश्यों के अनुरूप हैं: धर्म (नैतिक कर्तव्य) अर्थ (भौतिक धन) काम (इच्छा या संतुष्टि) और मोक्ष।

डॉ गुप्त सागर जी गुरुदेव की पुस्तक **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अग्रदूत पंडित दीन दयाल उपाध्याय** में पंडितजी को एक ऐसे राजनेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने न केवल स्वयं भारत को भारत के दृष्टिकोण से जानने–समझने–देखने की दृष्टि विकसित की, अपितु दूसरों को भी वैसी ही संदृष्टि प्रदान की। भारत की चिति एवं प्रकृति के मौलिक एवं सूक्ष्म द्रष्टा थे 'पं. दीनदयाल उपाध्यायजी, जिन्होंने सही अर्थों में व्यष्टि एवं समष्टि के चिरंतन सत्य एवं सदियों के अनुभव का साक्षात्कार कर, एक ऐसे उदबोध को प्रवृत्त किया, जिसका स्पंदन भारत की माटी में समाहित है।

डी बी ठेंगड़ी की पुस्तक **पंडित दीन दयाल उपाध्याय : आइडियोलॉजी एंड परसेप्शन एन इन्क्वेस्ट** में एक दूरदर्शी राजनीतिक विचारक के रूप में, पंडित उपाध्याय के विचार न केवल गहरे थे, बल्कि भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य की गहरी समझ में भी निहित थे। सामाजिक मुद्दों से लेकर राजनीतिक विचारधारा तक राष्ट्र से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर उनके विद्वतापूर्ण विचार भारत के सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों पर एक व्यापक और सूक्ष्म दृष्टिकोण को प्रकट करते हैं। यह पुस्तक उपाध्याय के बौद्धिक योगदान और वैचारिक स्पष्टता को सामने लाती है, जो संक्रमण के समय में राष्ट्र की जरूरतों को स्पष्ट करने की अनूठी क्षमता के साथ एक विवेकपूर्ण राजनीतिक विचारक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाती है।

शिव शक्ति नाथ बक्शी की पुस्तक **दीन दयाल उपाध्याय : लाइफ ऑफ आईडियालॉग पॉलिटिशियन** में पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रचारित और अभ्यास किए गए आदर्शों और मूल्यों, जिन्होंने भारतीय जनसंघ के

विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बाद में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की स्थापना में योगदान दिया, को इस पुस्तक में व्यवस्थित रूप से रेखांकित किया गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सिद्धांतों के साथ गहराई से जुड़े उपाध्याय ने संघ के माध्यम से राष्ट्र की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया, जो भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया। यह पुस्तक न केवल देश में राष्ट्रवाद की मजबूत भावना को बढ़ावा देने वाले अग्रणी नेताओं में से एक के रूप में उपाध्याय की यात्रा का पता लगाती है, बल्कि राज्य के शोषण और अन्याय के खिलाफ उनके दृढ़ रुख को भी उजागर करती है। यह आत्मनिर्भरता , नैतिक शासन और राष्ट्रीय एकता में निहित भारत के दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के उनके अथक प्रयासों पर प्रकाश डालता है।

4. उद्देश्य महत्व एवं प्रासंगिकता :

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के सामाजिक न्याय और आर्थिक अवधारणा आज के समय के लिए अत्यंत उपयोगी, सामाजिक तथा महत्ता का विषय है। आज के परंपरागत अकादमिक दृष्टि से दीन दयाल उपाध्याय अर्थशास्त्री नहीं थे, इससे भी बढ़कर थे। अर्थ चिंतक होने के साथ ही उनका व्यक्तित्व समाजसेवी भाव से भरा हुआ था। देश तथा समाज की व्यावहारिक समस्याओं का गहन अध्ययन के उपरांत भारत की वर्तमान स्थिति के हिसाब तथा व्यावहारिक रूप से चिंतन के क्या सूत्र हो सकते हैं। इस संबंध में पंडित दीन दयाल उपाध्याय का बहुत ही उपयोगी मार्गदर्शन हम सभी को होगा। पंडित दीन दयाल उपाध्याय का यह मानना था कि हमारी अपनी पुरातन सनातन परंपरा को बिलकुल न भुलाकर युगानुकूल रचना बनानी है। वर्तमान समय के सवालों का जवाब देने के लिए, उत्पन्न हुयी समस्याओं का समाधान

करने के लिए हमें आज की परिस्थितियों के अनुसार ही राष्ट्रहित में विचार करना होगा।

5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान :

इस शोध के माध्यम से पंडित दीन दयाल उपाध्याय के सामाजिक न्याय और आर्थिक अवधारणा से जुड़े विविध पक्षों का तथा घटनाक्रमों का अध्ययन करेंगे जैसे सामाजिक न्याय अर्थायाम की परिकल्पना, संपत्ति का स्वामित्व, उत्पादन की सीमा क्या हो, समाज सेवा, समाज में समभाव आदि। यह इस शोध के सार के रूप में सामने आयेगा।

6. अध्ययन क्षेत्र :

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के सामाजिक न्याय और आर्थिक अवधारणा को व्यापक रूप से देखना इसकी विशिष्टता का परिचायक है। यद्यपि इस पर पूर्व में भी कार्य हुये हैं लेकिन इसके विविध पक्षों का अध्ययन करना अभी बाकी है। इस संदर्भ में पंडित दीन दयाल उपाध्याय का सामाजिक न्याय और आर्थिक अवधारणा के विविध पक्षों का अध्ययन ही इस शोध प्रबंध का अध्ययन क्षेत्र है

7. अध्ययन पद्धति :

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के सामाजिक न्याय और आर्थिक अवधारणा के विविध पक्षों को एक साथ देखने का जो प्रयास इस शोध के माध्यम से किया जा रहा है यह निश्चित रूप से देश के विकास के लिए अति महत्वपूर्ण होगा।

8. शोध सामग्री की उपलब्ध्ता :

प्रस्तुत शोध के विषय पर्याप्त मात्रा में है परन्तु बिखरे हुये हैं। इन्हें संकलित कर शोध हेतु सामग्री बनाने में विभिन्न संस्थाओं, ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाओं को माध्यम बनाया गया है। बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना, ललित नारायण

मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा पुस्तकालय, प्रधानमंत्री अभिलेखागार दिल्ली, संसद भवन पुस्तकालय दिल्ली आदि में पर्याप्त मात्रा में रिकार्ड्स उपलब्ध है। जिसका उपयोग शोध में होना सुनिश्चित है।

9. परिकल्पना (यदि कोई हो) :

यह शोध एक छोटी परन्तु महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। इसके द्वारा पंडित दीन दयाल उपाध्याय के सामाजिक न्याय और आर्थिक अवधारणा के विविध पक्षों को जानने तथा वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता को इस शोध से जानने में मदद मिलेगी।

10. कार्य योजना :

प्रस्तावित शोध कार्य को निम्नलिखित अध्यायों के अन्तर्गत सम्पन्न किया जायेगा–

प्रथम अध्याय – भूमिका

द्वितीय अध्याय – पंडित दीन दयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व

तृतीय अध्याय – पंडित दीन दयाल उपाध्याय का सामाजिक न्याय की अवधारणा

चतुर्थ अध्याय– पंडित दीन दयाल उपाध्याय की आर्थिक अवधारणा

पंचम अध्याय – पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता

षष्ठ अध्याय – पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों का वैश्विक प्रभाव

सप्तम अध्याय – निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

11. संदर्भ ग्रंथ सूची :

प्राथमिक स्रोत :

1. गाजीपुर पुलिस रिकॉर्ड्स
2. संसद भवन पुस्तकालय रिकॉर्ड्स
3. भारतीय जनता पार्टी पुस्तकालय रिकॉर्ड्स

द्वितीयक स्रोत :

1. शर्मा, महेश चन्द्र : पंडित दीन दयाल उपाध्याय कर्तृत्व एवं विचार, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।
2. सिंह, अमरजीत : मैं दीन दयाल उपाध्याय बोल रहा हूँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
3. शर्मा, महेश चन्द्र : दीन दयाल उपाध्याय, सम्पूर्ण वांड्.मय, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. उपाध्याय, दीन दयाल : एकात्म मानववाद तत्व मीमांसा, सिद्धान्त विवेचन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
5. सिंह, अमरजीत : एकात्म मानववाद के प्रणेता, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
6. उपाध्याय, दीन दयाल : भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा, राष्ट्र धर्म पुस्तक प्रकाशन, दिल्ली।
7. उपाध्याय, दीन दयाल : राष्ट्र चिंतन, अर्थनीति का भारतीयकरण, राष्ट्र धर्म पुस्तक प्रकाशन, दिल्ली।
8. उपाध्याय, दीनदयाल : इंटरनेशनल ह्यूमनिज्म, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
9. उपाध्याय, दीनदयाल : जगद्गुरू शंकराचार्य, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
10. उपाध्याय, दीनदयाल : दि टू प्लान्स, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
11. उपाध्याय, दीनदयाल : सम्राट चन्द्रगुप्त, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

पत्र—पत्रिकायें :

1. राष्ट्रधर्म
2. इतिहास दर्पण
3. इतिहास
4. ऑर्गेनाइजर
5. पांचजन्य

शोध पर्यवेक्षक **शोधार्थी का हस्ताक्षर**

(प्रो0 संजय झा) **(कुणाल)**
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
एल0एन0एम0यू0, दरभंगा